विकास कार्यक्रम और स्थानीय सामाजिक कार्यकर्त्ता

सुहास कुमार

आज सामाजिक क्षेत्र में काम कर रहे सभी संगठनों को सामाजिक कार्य और सेवा का मतलब ज़्यादा साफ़ हो गया है। वे समझ गए हैं कि अगर सचमुच पिछड़े लोगों को आगे बढ़ाना है तो हर जगह उन्हें साथ लेकर चलना होगा। कोई भी विकास या सहायता कार्यक्रम बनाए जाएं तो उनके नज़रिए को ध्यान में रखना होगा, तभी वे सफल हो सकेंगे। यह तभी हो पाएगा जब उनकी बात भी सुनी जाए। आम जन जिनमें 50 फीसदी महिलाएं है अपनी बात ठीक से कह सकें, उनकी बात का असर हो, इसके लिए उनकी ताक़त, उनका अपने पर भरोसा बढ़ाना होगा।

आज देश के कोने कोने में कई सामाजिक व महिला संगठन काम कर रहे हैं। कई सरकारी व ग़ैर सरकारी योजनाओं को लागू करने का काम वे ही कर रहे हैं। ऐसे में स्थानीय या क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं का काम बड़े महत्व का हो जाता है। वे कागज़ के लिखे को काम में बदलते हैं। वे कार्यकर्त्ता लोगों के विकास से जुड़े कार्यक्रमों की एक बुनियादी कड़ी हैं। उनके कंधों पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी है।

महिलाओं के साथ स्थानीय कार्यकर्त्ताओं का महिला होना ज़रूरी है, लेकिन उनका केवल महिला होना ही ज़रूरी नहीं है। उनकी एक खास सोच व खुला नज़रिया होना भी ज़रूरी है। आगे तभी बढ़ा जा

साभार—श्रमिक भारती 1986-97

सकता है जब पीछे की गलत बातों को सुधारा जाए। पीछे की गलत बातों को समझा जाए, गलत रीति रिवाज़ों, तौर तरीकों को बदला जाए।

कार्यकर्त्ताओं का संवेदनशील होना भी जरूरी है। दूसरों की बातों को समझदारी से सुनना समझना होगा तभी तो कुछ हल निकल पाएंगे। बहुत सी तकलीफ़ों व दर्दों को बिना उनसे गुज़रे भी महसूस करना होगा। यह भी समझना होगा कि कहां तक समस्याएं अलग अलग हैं, कहां वे पूरे सामाजिक ढांचे से जुड़ जाती हैं।

हमारी बस्ती में काम कर रही एक कार्यकर्त्ता से बातचीत हुई। उसने बताया "कार्यकर्त्ता को वहां बोली जाने वाली भाषा और बोली को अच्छी तरह समझना चाहिए। उसमें "मैं" की भावना नहीं होनी चाहिए। जिनके साथ काम कर रही

हो अपने को उन्हीं में से एक समझना चाहिए। उसे बात धीरज और तसल्ली से सुनना आना चाहिए। उसके चेहरे पर मुस्कराहट होनी चाहिए, दुख की बात सुनकर अफ़सोस का भाव होना चाहिए। उसे लोगों की बात का जवाब शांति और नम्र भाव से देना चाहिए। उसे ज़्यादा से

साभार–श्रमिक भारती 1986-97

ज़्यादा जानकारी पाने की हमेशा कोशिश करते रहना चाहिए। कार्यकर्त्ता को सबसे मेलजोल करना आना चाहिए। जिन लोगों के बीच काम कर रही हो उनसे एक हेलमेल रिश्ता बनाना ज़रूरी होता है।"

–जीतेन्दर कौर (अंकुर संस्था)

रिश्ता बनाने का गुण

यह आसान नहीं है, और न ही सब यह आसानी से बना पाते हैं। हमारा समाज, हमारा धर्म महिलाओं को चुप रहना सिखाता है। उन्हें सिखाया जाता है हर हाल में चुप रहना और समझौता करना। इस सोच से उन्हें बाहर निकालना आसान काम नहीं है। इसके लिए कुछ अपने अंदर झांकना होगा। अपनी बात खुलकर कहनी होगी। अपनी मुश्किलों, समस्याओं को भी बताना पड़ सकता है। कार्यकर्त्ता खुद खुलकर बात करेंगे तभी महिलाएं खुलेंगीं।

सोचने समझने की एक बात यह भी है कि एक ही समूह में अलग अलग जाति, धर्म, गरीब, ज़्यादा गरीब महिलाएं हो सकती हैं। एक कार्यशाला के दौरान यह बात सामने आई। "हमें नहीं मालूम था कि पाली में इतनी तरह की औरतें रहती हैं। वहां हरिजन महिलाएं, पिछड़ी जाति की महिलाएं, सवर्ण महिलाएं, अमीर व गरीब महिलाएं रहती हैं, यह तो हमें पता था, लेकिन हमें यह नहीं पता था कि वहां सासें, बहुएं, जिठानी, ननद, भाभी, चाची, मां-बेटियां हैं जिनसे एक बार एक साथ बात करने में मुश्किलें आती हैं यही नहीं वहां विधवा, शादीशुदा, कुंवारी, "अच्छी" और "बुरी", बांझ, बच्चे वालियां, केवल लड़कियों की माताएं, घरेलू और घर पर बोझ होने वाली महिलाएं भी इस सूची में शामिल हैं।"

–सखी केन्द्र, कानपुर–एक रपट

स्थानीय कार्यकर्त्ताओं का काम महिला समूह और संगठन बनाना भी है, कैसे उन्हें आपस में जोड़ा जाए और खुद से जोड़ा जाए, यह एक समझ-बूझ कर करने वाला काम है। संगठन बनाने के लिए समूह की संरचना को पूरी तरह समझना होगा, ऊपर दी हुई तमाम महिलाओं की सूची को ध्यान में रखना होगा।

कार्यकर्त्ताओं को खुद हल निकालने के बजाए ऐसे बात करनी चाहिए कि महिलाएं खुद हल सुझाने में मदद करें।

सामाजिक कार्यकर्त्ता का काम काफी मेहनत और मुश्किल वाला है। इसके लिए हिम्मत भी चाहिए।

इस काम में रुचि हो व सामाजिक कल्याण के काम की इच्छा हो तभी यह काम करना चाहिए। उसे केवल पैसा कमाने के लिए नौकरी भर नहीं समझना चाहिए। सच्ची लगन व जोश हो तो कोई भी काम मुश्किल नहीं है।

आज देश के कोने कोने में कई सामाजिक व महिला संगठन काम कर रहे हैं। कई सरकारी व गैर सरकारी योजनाओं को लागू करने का काम वे ही कर रहे हैं। ऐसे में स्थानीय या क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं का काम बड़े महत्व का हो जाता है। वे कागज़ के लिखे को काम में बदलते हैं। वे कार्यकर्त्ता लोगों के विकास से जुड़े कार्यक्रमों की एक बुनियादी कड़ी हैं। उनके कंधों पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी है।

कार्यकर्त्ता को यह नहीं सोचना चाहिए कि वे लोगों को कुछ सिखाने भर आई हैं। हरेक के पास अनुभव व ज्ञान होता है। यह सीखने सिखाने दोनों का काम है। अपनी बातें उन पर थोपी जाने जैसी नहीं होनी चाहिए। कोशिश यह होनी चाहिए कि खुद महिलाओं का ज्ञान, अनुभव, नज़रिया उनकी ताक़त बने, कमज़ोरी नहीं।

कुछ और ध्यान में रखने वाले बिंदुः

- खुद से शुरू करें फिर परिवार और समाज की तरफ़ बढ़ें।
- ठोस अनुभवों से शुरू करें, उन पर सोचें, निचोड़ निकालें। फिर हल निकालने की ओर बढ़ें।
- शुरू में एक ही मुद्दा लें, वह भी आसान मुद्दा लें। धीरे धीरे और मुद्दे जोड़ें। कठिन मुद्दे बाद में उठाना अच्छा है। शुरू में जाना पहचाना, साफ़ दिखने वाला मुद्दा लें। सामने न दिखने वाले मुद्दे बाद में उठाएं।
- महिलाओं को बात इस तरह बताई जाए कि वे अपनी कठिनाइयों और समस्याओं के कारण खुद ढूंढे। वे समझ सकें कि उनका दमन और शोषण कहां और कैसे हो रहा है।
- महिलाएं एक दूसरे से जुड़ेंगी तो ताक़त आएगी और अपनी बात ज़्यादा निडर होकर कह पाएंगी। उन्हें आपस में जोड़ने की कोशिश बराबर चलती रहनी चाहिए।
- महिलाओं की कही बातों के साथ दो अनकही बातों को भी ढूंढना होगा।

इतनी लंबी सूची देने का यह मतलब नहीं है कि हर कार्यकर्त्ता में सभी गुण होना जरूरी है। कुछ में कई गुण स्वभाव से ही मौज़ूद हो सकते हैं तो कुछ जल्दी सीख लेते हैं। कुछ को ज़्यादा समय लग सकता है। अपने को लगातार विकसित करने, आगे बढ़ने की कोशिश ज़ारी रहे तो काम में ज़रूर सफलता मिलेगी।

पूरे समय महिलाओं को तो साथ लेकर चलना ही होगा। पूरी बस्ती को साथ लेना होगा। जब तक पुरुष संवेदनशील नहीं होंगे और महिलाओं की मुश्किलों को नहीं समझेंगे—समाज में कोई भी बदलाव नहीं आ पाएगा और सारे विकास कार्यक्रम का आखिरी मुकाम तो रहन-सहन व जीवन को बेहतर बनाना ही है। □